हिन्दी विभाग

जमशेदपुर को-ऑपरेटिव कॉलेज

के छात्र समूह की त्रैमासिक दीवार पत्रिका

युवमानस

नवजन मन की गाथा

अंक : अप्रैल-जून, 2024

संपादक: **बबिता माण्डी**

सह-संपादक: **प्रीति बुढ़**

पृष्ठ सज्जा: **सोनी, पूनम, नन्दनी, नरेन्द्र सोय**

संपादकीय

प्रिय पाठकों,

हमारी त्रैमासिक पत्रिका युवमानस का यह वर्ष 2024 का दूसरा अंक है। पहले अंक को आप लोगों का स्नेह मिला इसके लिए आप सभी का आभार।

साथियों इस बार भी हमने अपने पत्रिका को किसी विशेष विषय में नहीं बांधा। जब लेखक या लेखन को किसी सीमा में बांधते हैं या उसका दायरा तय करते हैं तो वह कृत्रिम लगने लगती है।

लेखन उन्मुक्त होता है और हम मानते हैं उसे स्वतंत्र ही रहना चाहिए। लेखन में उन्मुकता का अर्थ है विचारों, भावनाओं और शब्दों को बिना किसी बंधन या रुकावट के सहज और स्वभाविक रूप से व्यक्त करना है।

कहने से तात्पर्य है लेखक बिना किसी डर, संकोच या सामाजिक नियमों की परवाह किए बिना अपनी बात कहे।

जब लेखन मुक्त होता है, तो यह स्वतंत्र और सृजनात्मक होता है।

ऐसा लेखन पाठकों को भी सीधे तौर पर प्रभावित करता है। इस प्रकार का लेखन खुद के साथ एक ईमानदार संवाद जैसा है। जहाँ लेखक अपनी अंतरात्मा की आवाज़ को सुने और उसे शब्दों में डाले।

युवमानस के इस अंक में हमारी साथियों की अंतरमन की आवाज़ हमें इस अंक के जरिए सुनाई देती है। जो वह पाठकों तक पहुँचाना चाहते हैं।

- बबिता माण्डी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 3)

राहला (लघु कथा)

रात के तारे अभी डूबे भी नहीं हैं और कायरी की नींद खुल गई, वो जल्दी-जल्दी अपनी साड़ी ठीक कर आँगन बुहारने निकल गई। फिर पानी भरने कुएँ पे जाना, आकर भात चढ़ाना उसके रोज के काम हैं। उसकी बेटी राहला चैन से सो रही है। पति बाहर कमाने गया है। दतुन करते-करते वो कुछ सोचते हुए आकाश की तरफ निहारने लगती है। उसने जो सपने देखे है, अपनी बेटी के लिए उसके बारे में सोच कर मुस्कुरा रही होती है कि इतने में उसके कान में एक आवाज पड़ती है- 'ए राहला आयो सेरमा दो चेत एम कोयोअ: आका: आ, सेरमा कोयोअ: काअ: खान चेत चाँदो बोंगा ए दाका ए ऐमा आ' ये बुधनी थी. उसकी पड़ोसन जो उसकी रोज की साथी थी। संथाली में इसका मतलब था राहला की मम्मी आकाश के तरफ क्या देख रही हो, आकाश निहारने से ईश्वर खाने को देगा? कायरी मुसकुराई और अपने काम में जुट गई। दोनों भोर की पहली गाड़ी से शहर आती हैं और रात ढले घर पहुँचती है। गाँव से शहर तक के बीच का सफर उसके लिए किसी भयानक सपने जैसा है। रोज की भीड़ में अपना वजूद बचाना अपने माँड भरे खाने के टिफिन को बचाना। उसे सीमेंट से भरे धूल इतना परेशान नहीं करते जितने की गाड़ी में आते-आते भीड़ के गंदे, स्पर्श, वो स्पर्श जिसे वो कभी 'राहला' तक पहुँचने नहीं देना चाहती यही सोच कर उसने अपनी बेटी का नाम राहला रखा है। 'राहला' का अर्थ संथाली भाषा में उड़ता हुआ बादल है । उन्मुक्त जिसे कोई पकड़ नहीं सकता, यही सोचकर वह रोज जी तोड़ मेहनत करती और उन सभी स्पर्शों का कड़वा घूंट पी कर रह जाती है। समय बीता कायरी की तबीयत कुछ बिगड़ने सी लगी, कायरी का सरकारी अस्पताल में इलाज चला, खून की जाँच में पता चला कुछ बड़ी बीमारी है। बड़े डॉक्टर साहब ने कहा एक्स-रे में पता चलेगा आखिर बीमारी क्या है। जाँच में पता चला फेंफड़ों में सीमेंट के कण जमें है, और संक्रमण बहुत अधिक फैल चुका है। बचना मुश्किल है। कुछ समय बाद कायरी सरकारी अस्पताल में ही चल बसी। कायरी के आखरी शब्द थे सीमेंट के धूल ने मेरी जान नहीं ली उन गंदे घिनोने स्पर्श और गंदी नजरों ने मेरी आत्मा नोच ली। 'राहला' अब बड़ी हो चुकी है और माँड पानी से भरा टिफीन भीड़ से बचाते हुए शहर जा रही है।

- प्रीति बुढ़ (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 3)

“

जैसा समाज हम बनाएँगे, उसी के अनुसार कला और साहित्य की कीमत तय होगी।

– केदारनाथ सिंह

ऑल-राउंडर महिलाएं एक मिथक

समाज निर्माण में जितना योगदान पुरुष का है उत्तना ही स्त्री का भी। पहले महिलाओं को घर की शोभा माना जाता था लेकिन समय बदला और महिलाएं घर से निकली अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुई और अपने लिए खड़े होना उन्होंने सीखा चूल्हे और बच्चों से आगे। स्त्री अगर काम करने वाली हो तो उससे यह आशा की जाती है कि वह घर के सारे काम संभालने के बाद ही वह जाए। ऑफिस से आने के बाद वह सारे काम करे। वह उसके माता-पिता का ध्यान रखे और पुरुष अपने काम से लौट के पसर जाए ये तो स्त्री के साथ अन्याय ही हुआ। और मिथक ऊपर से यह है कि स्त्रियाँ तो इसी के लिए बनी है। समाज तो एक तरफ तो उसे देवी मानता है और देवी कहकर उसकी कितनी दुर्दशा की गई इससे हर कोई वाकिफ है।

हरिशंकर परसाई के शब्दों में हाँ स्त्री होना बहुत सी असमर्थताओं को भुगतना है। अबला कहा जाता है तो उसे अबला बनाकर ही छोड़ेगे। जो अबला बनने से इनकार करेगी उसे कुलटा बनायेंगे। अगर किसी को ऑफिस में प्रमोशन मिल जाए तो सीधे उसके चरित्र पर हमला। ऑल-रॉन्डर महिला ये मिथक समाज में एक वर्ग को पीछे ढकेलने की मंशा है उसे मजबूर कर दिया जाता है घर संभाले या ऑफिस। महिलाओं की सफलता का माप केवल पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों से नहीं किया जा सकता। महिलाओं की सफलता का माप । मूल्यांकन उनकी व्यक्तिगत आकांक्षाओं करियर में उनके योगदान में और समाज में उनकी भूमिका के विविध पहलुओं से किया जाना चाहिए। हर महिला की सफलता की परिभाषा अलग होती है, और इसे सीमित नजरिए से नहीं देखा जाना चाहिए।

- रातरानी कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 1)

“

लोग क्यों पूछते हैं कि यह किस बारे में है? मानो उपन्यास सिर्फ एक ही चीज़ के बारे में होना चाहिए।

– चिमामांडा नगोजी अदिची

नेलपेंट (लघु कथा)

शहर में बुद्धिजीवी लोगों ने मीटींग रखी कि शहर में एक ऐसा मंच होना चाहिए जिसमें सामाजिक मुद्दों पर अपनी बात रखी जाए। कमीटी का गठन हुआ, लोग आते अपनी बात रखते। इसी बीच पर्यावरण दिवस के अवसर पर कुछ सज्जनों को आमंत्रित किया गया। सभी ने अपने विचार रखें सहसा कुछ लाइनों ने भीड़ का ध्यान अपनी ओर खींचा एक सज्जन बता रहे थे उन्होने किन-किन चीजों का बलिदान किया, पर्यावरण और प्रकृति को बचाने में, वो कोई NGO के मालिक थे, जो अनाथ बच्चों की शिक्षा का भार उठाती थी। वो कह रहे थे कि हमने अभ्रक के खदानों से बच्चों को निकालकर अपने आश्रम में पनाह दी है, अभ्रक मेकअप इंडस्ट्री में उपयोग किया जाता है। नेलपेंट में चमक बढ़ाने के लिए इसका उपयोग होता है और अभ्रक निकालने के लिए कोमल हाथों की आवश्यकता पड़ती है। इससे हम प्रकृति के साथ तो अन्याय कर ही रहे है, साथ-साथ नन्हे बच्चों को बाल मजदूरी और घातक बीमारियों की तरफ भी ढकेल रहे है। ये सारी बातें कुछ लड़कियों ने सुनी और प्रण किया अब से हम भी नेलपेंट नहीं खरीदेंगी और इस क्रांति का हिस्सा बनेगी। कुछ महीने बीतने पर उन लड़कियों ने सोचा क्यों ना उस व्यक्ति विशेष को आभार प्रकट किया जाए कि उनकी बातों से प्रेरणा लेकर हमने पर्यावरण को बचाने और बच्चों की सेहत के लिए एक छोटा सा कदम उठाया है। जिसे हम मिशन का रूप देना चाहती है। सौभाग्य से एक शाम टहलते-टहलते उन्हें वो सज्जन दिख गये वो उनकी ओर बढ़ी सहसा उनके कदम ठिठक गये। वह सज्जन सिगरेट लिए बाहर अपने बच्चे के साथ खड़े थे और शीशे वाले पार्लर के भीतर उनकी पत्नी अपने नाखूनों पर रंग चढ़वा रही थीं।

- नन्दनी कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 3)

"

पुस्तकालयों का अस्तित्व ही इस बात का सर्वोत्तम प्रमाण है कि हम अभी भी मनुष्य के भविष्य के लिए आशा रख सकते हैं।

– टी. एस. इलियट

मेच्योर

ओ तू इतना बड़ा हो गया। गयी लेकिन अब भी बचकाना हरकत जारी है आखिर कब बड़ा होगा तू? हम सब अक्सर इन सवालों से गुजरते है और यह सोचना लाजमी है की आखिर “मेच्योर” होना होता क्या है? समाज में कुछ लोग जो हमें मेच्योर’ बन जाने की सलाह देते है उनके हिसाब से अगर हम इसका उत्तर ढूंढने का प्रयास करें तो, जीवन में हंसना और बेवजह किसी गाने को गुनगुनाना इस समाज के हिसाब से गलत है दुनिया से खुद को अलग कर लेना, जबरदस्ती का तनाव पाल लेना, अतिरिक्त सोच-सोच कर खुद को मरीज बना लेना, फिजुल ही स्वयं को व्यक्त रखना, मोहल्ले के चिड़चिड़े अंकल – आंटी बन जाना जो बच्चों पर इसलिए बरस जाते है क्योंकि उन्होंने किसी बेसहारा कुत्ते या बिल्ली को बिस्किट खिला दिए. अगर यही इस समाज की ‘मेच्योर’ हो जाने की परिभाषा है तो हम किसी बेसहारा का सहारा बनते, किसी के जूड़े में गुलाब का फूल, खोंसते, रफी साहब के गाने गुनगुनाते हुए ही ठीक हैं।

हम इम्मेच्योर ही ठीक है।

- पूनम कुमारी (स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 3)

“

अध्यापक किसी भी अन्य समुदाय की तुलना में सभ्यता के ज्यादा बड़े संरक्षक होते हैं।

– बर्ट्रेंड रसेल

कोयला मज़दूर

अधजला कोयला
फेंक दिया गया है तुम्हारे आंगन में
तुम्हारे बच्चे अधजले होंगे
तुम्हारे गीत अधजले होंगे
तुम्हारा प्रेम अधजला होगा
तुम्हारी ज़मीन अधजली होगी
अधूरा होगा तुम्हारा ब्राह्मांड
कोयले के ढेर पर बैठकर
तुम आग से बच नहीं सकते
अधजला कोयला तुम्हें जलाएगा
या फिर तुम उसे जलाओगे ।

- अनुज लुगुन

जिंदगी अजीब है

ठोकरें खाती है बेशक,...
उठ फिर चलना भी चाहती है।
छू कर गगन की बुलंदियों को,..
जमीन से फिर मिलना भी चाहती है।
जिंदगी वाकई अजीब है दोस्त,,
एक वक़्त के लिए मरना भी चाहती है।
सब कुछ गवां जाएगी एकदिन,,
फिर भी लड़ना भी चाहती है।
सारी उलझनों को सुलझाने में,,
गुमनाम पते तक जाना भी चाहती है।
जिंदगी वाकई अजीब है,,
वहाँ से वापस फिर लौटना भी चाहती हैं।

- पूनम कुमारी
(स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 3)

लौट आ

मेरे मन की धरती पर
प्रश्नों का प्रतिकार लिए
लौट आ
ढूंढा है तुझको बहारों में
आकाश के चाँद सितारों में
अधरों पर एक प्यास लिए
उर में एक विश्वास लिए
हिज्र में मुझको शीतलता देने
बनके ठंडी हवा का झोंका
लौट आ लौट आ
कुछ बाधाएँ आएँगी कुछ घटाएं छाएंगी
रैन के इस अंधेरे में
तुम अरुणिम सा चेहरा लेकर
मन में एक विश्वास लिए
बरसा की टप-टप बूंदों में
तुम गुंजित मधुमास लिए
आकर मुझको, मुझसे मिला
लौट आ लौट आ।

- आर्यवंत महाकुड़
(स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 1)

मरती, झड़ती, खपती स्त्रियाँ

जंगल में मर गई तितलियाँ
सूख गई पत्तियाँ
किसी के खेत – खलिहान में
जीवन-भर खप गई स्त्रियाँ
मरने, झड़ने, खपने के बाद भी
धरती को जीवान्त बनाती रहती
वे सब किसी कला में बदल जाती हैं
पर उन ज़िन्दा आदमियों का कोई क्या करे,
जो जीवन भर
धरती का नक़्शा बिगाड़ते हैं
दुनिया में प्रदूषण फैलाते हैं
विध्वंस के सिवा कुछ भी नहीं उपजाते हैं
जाने क्यों धरती पर वे पैदा होते हैं,
जिनके भीतर स्त्री ज़िन्दा रह जाती हैं
वे ही कहीं बच जाते हैं
लौटकर आते हैं
और धरती को सुन्दर बनाने में
स्त्री का हाथ बंटाते हैं।

- जसिंता केरकेट्टा

साजन यह मत जनाजो, कि तुम बिछुड़े मोहे चैन
जैसे बन की लाकड़ी सुलगत हूँ दिन रैन।

– बाबा फरीद

अब तुम वह नहीं

तुम अब वह नहीं जो थी पहले
एक आकृति, धुँधली सी, मरे हुए तितली की।
रंगों की छटा, अब बची नहीं,
सिर्फ एक काली छाया, खोई हुई निगाहों में।
तुम्हारी हँसी, एक खंडहर,
अब बची नहीं कोई धुन ।
तुम्हारे स्पर्श, एक झूठा सपना,
अब बचा नहीं, कोई गुण।।

- राहुल मंडल
(स्नातकोत्तर, सेमेस्टर 3)

हमारी भाषा अलग थी. मैंने उससे पूछा क्या तुम मेरी भाषा समझते हो?
उसने धीरे-से कहा, तुम्हारी भाषा से ज़्यादा मैं तुम्हें समझता हूँ

– जसिंता केरकेट्टा

धन्यवाद